ब्रिक्स (BRICS)

Dr. Shilpi Jaiswal
Assistant Professor
Deptt of Political Science
U. P. College

ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका।

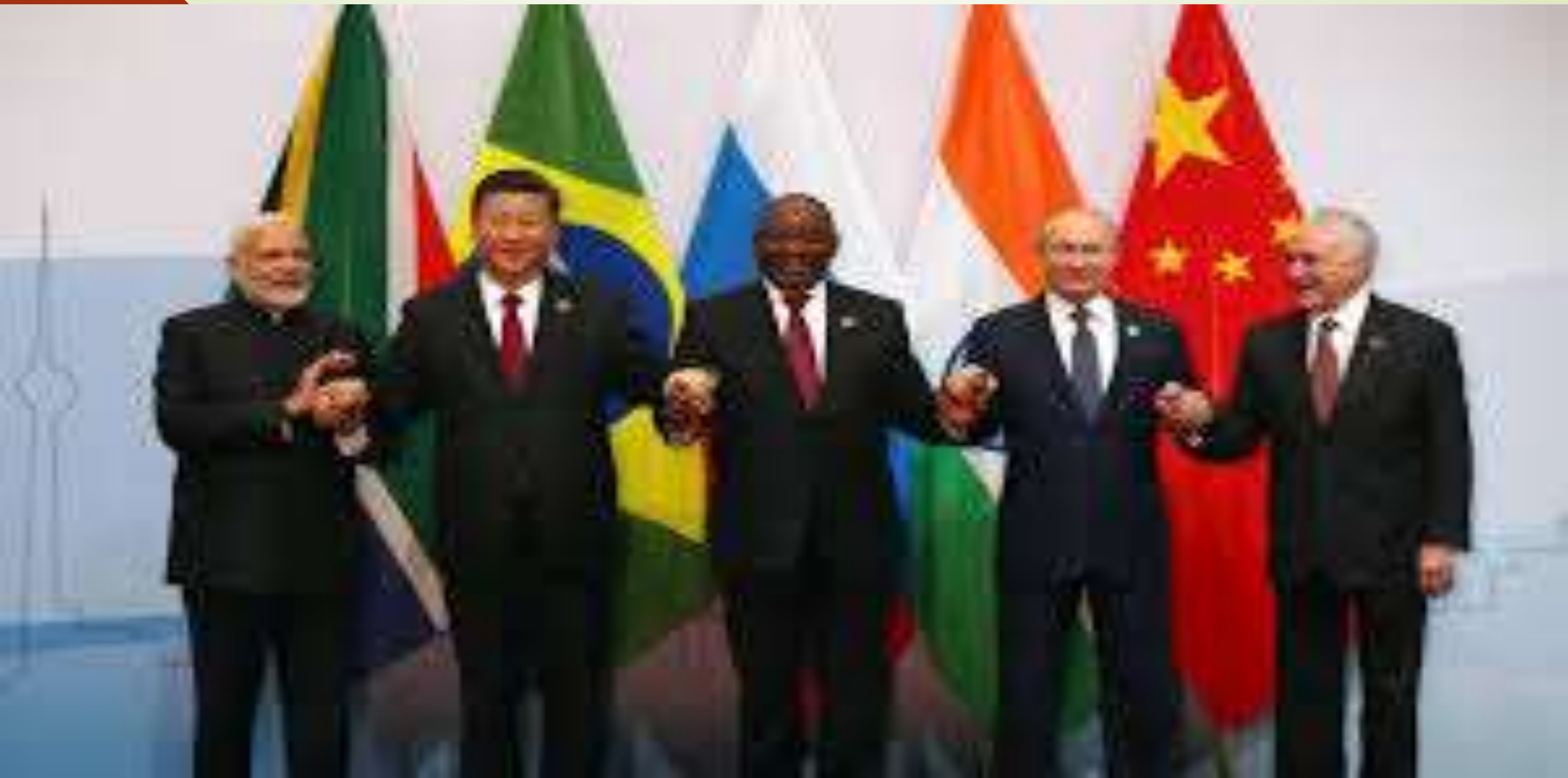

Introduction

- ब्रिक्स (BRICS) एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जिसमें पाँच प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं वाले देश शामिल हैं: ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका। इस संगठन का नाम इन देशों के नामों के पहले अक्षरों (B-R-I-C-S) से लिया गया है। ब्रिक्स का मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सहयोग को बढ़ावा देना है और वैश्विक सत्ता संतुलन में सुधार लाना है। यह समूह विकासशील देशों की आवाज़ को मज़बूत करने का कार्य करता है और वैश्विक स्तर पर आर्थिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर अपनी साझा भूमिका निभाने का प्रयास करता है।

ब्रिक्स का गठन 21वीं सदी की शुरुआत में उभरते हुए बाज़ारों के महत्वपूर्ण देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया था। इसका एक बड़ा उद्देश्य दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच एक संतुलन बनाना और विकसित देशों द्वारा संचालित वैश्विक संस्थाओं में सुधार की मांग करना है। ब्रिक्स विश्व के पाँच सबसे बड़े विकासशील देशों को एक साथ लाता है, जो वैश्विक आबादी का 41%, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 24% तथा वैश्विक व्यापार का 16% प्रतिनिधित्व करते हैं।

- वर्ष 2009 से ही ब्रिक्स सदस्य देश वार्षिक शिखर बैठकें आयोजित कर रहे हैं।

ब्रिक्स की उत्पत्ति और इतिहास:

- ब्रिक्स की अवधारणा का सबसे पहला उल्लेख 2001 में गोल्डमैन सैक्स के अर्थशास्त्री जिम ओ'नील ने किया था। उन्होंने "ब्रिक" (BRIC) शब्द का उपयोग ब्राज़ील, रूस, भारत और चीन के लिए किया था, क्योंकि ये देश तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाएँ थीं और भविष्य में वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने की क्षमता रखते थे। उस समय दक्षिण अफ्रीका इस समूह का हिस्सा नहीं था।
- 2006 में, इन चार देशों ने औपचारिक रूप से एक समूह के रूप में अपनी पहली बैठक आयोजित की, और धीरे-धीरे ब्रिक्स के रूप में यह समूह विकसित हुआ। 2010 में दक्षिण अफ्रीका को भी इस समूह में शामिल किया गया और तब से इसे ब्रिक्स (BRICS) कहा जाता है। इस समूह ने अपनी पहली शिखर सम्मेलन बैठक 2009 में रूस के येकातेरिनबर्ग में आयोजित की। तब से हर साल ब्रिक्स शिखर सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं, जिसमें सदस्य देशों के नेता महत्वपूर्ण वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर विचार-विमर्श करते हैं।

ब्रिक्स के सदस्य देश:

1. **ब्राज़ील:** दक्षिण अमेरिका की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध देश, ब्राज़ील कृषि और खनन उत्पादों का एक प्रमुख निर्यातक है।
2. **रूस:** ऊर्जा संसाधनों से समृद्ध, रूस दुनिया के सबसे बड़े प्राकृतिक गैस और तेल उत्पादकों में से एक है और इसका भूराजनीतिक प्रभाव भी वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण है।
3. **भारत:** दुनिया का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश और तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था है। भारत सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा उद्योग और विनिर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।
4. **चीन:** दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश, चीन वैश्विक व्यापार और विनिर्माण का एक प्रमुख केंद्र है।
5. **दक्षिण अफ्रीका:** अफ्रीका की सबसे विकसित अर्थव्यवस्था और खनिज संसाधनों में समृद्ध, दक्षिण अफ्रीका को अफ्रीकी महाद्वीप के प्रतिनिधि के रूप में ब्रिक्स में शामिल किया गया।

ब्रिक्स का उद्देश्य और महत्व:

ब्रिक्स का प्राथमिक उद्देश्य वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में सुधार करना और एक बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था का समर्थन करना है, जो सिर्फ कुछ विकसित देशों के हाथों में न हो। इसके अन्य प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. **आर्थिक सहयोग और विकास:** ब्रिक्स के सदस्य देश आपसी व्यापार और निवेश को बढ़ावा देकर आर्थिक विकास को गति देना चाहते हैं।
2. **विकासशील देशों की आवाज़ को मज़बूती देना:** ब्रिक्स का उद्देश्य वैश्विक मंचों पर विकासशील देशों की आवाज़ को मज़बूत करना और उनके हितों की रक्षा करना है।
3. **वित्तीय स्थिरता:** ब्रिक्स देश वैश्विक वित्तीय संकटों से निपटने के लिए आपसी वित्तीय सहयोग को बढ़ावा देते हैं। इसके तहत कंटीजेंसी रिज़र्व अरेंजमेंट (CRA) जैसे पहल की गई हैं।
4. **वैश्विक संस्थानों में सुधार की मांग:** ब्रिक्स समूह अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों, जैसे कि विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) में सुधार की मांग करता है, ताकि इनमें विकासशील देशों का भी उचित प्रतिनिधित्व हो।
5. **सांस्कृतिक और सामाजिक आदान-प्रदान:** ब्रिक्स देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

ब्रिक्स की संरचना और कामकाज:

- ब्रिक्स की कोई स्थायी सचिवालय या औपचारिक संविधान नहीं है। यह एक शिखर सम्मेलन-आधारित संगठन है, जिसमें सदस्य देशों के नेता सालाना बैठक करते हैं। यह संगठन विभिन्न कार्यसमूहों और समितियों के माध्यम से अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कार्य करता है।

1. **न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB):** ब्रिक्स देशों द्वारा 2014 में स्थापित किया गया न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB), विकासशील देशों में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण उपलब्ध कराता है। इसका मुख्यालय चीन के शंघाई में स्थित है। इसका उद्देश्य विश्व बैंक और IMF जैसे वैश्विक वित्तीय संस्थानों के विकल्प के रूप में कार्य करना है।
2. **ब्रिक्स बिज़नेस काउंसिल:** यह काउंसिल ब्रिक्स देशों के व्यापारिक समुदायों के बीच सहयोग और व्यापारिक अवसरों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से काम करती है।
3. **कंटीजेंसी रिज़र्व अरेंजमेंट (CRA):** यह व्यवस्था वैश्विक वित्तीय संकटों से निपटने के लिए ब्रिक्स देशों को आपसी वित्तीय सहयोग प्रदान करती है। इसका उद्देश्य वैश्विक वित्तीय स्थिरता को बनाए रखना और वैश्विक वित्तीय झटकों से बचाव करना है।

ब्रिक्स की उपलब्धियाँ:

1. **आर्थिक विकास और व्यापार:** ब्रिक्स ने सदस्य देशों के बीच आपसी व्यापार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2019 में, ब्रिक्स देशों के बीच व्यापारिक आंकड़े $500 बिलियन से अधिक थे। इसने इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करने और वैश्विक व्यापार में उनका योगदान बढ़ाने में मदद की है।
2. **वित्तीय संस्थान की स्थापना:** न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB) और CRA जैसे वित्तीय संस्थान ब्रिक्स के प्रमुख योगदानों में से हैं। NDB ने विभिन्न विकासशील देशों में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए अरबों डॉलर का वित्तपोषण प्रदान किया है।
3. **सामाजिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** ब्रिक्स ने शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भी सहयोग को बढ़ावा दिया है। इसके तहत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और विश्वविद्यालयों के बीच आदान-प्रदान की पहल की गई है।
4. **वैश्विक मंचों पर प्रभाव:** ब्रिक्स ने संयुक्त राष्ट्र और G20 जैसे वैश्विक मंचों पर विकासशील देशों के हितों को मजबूती से उठाया है। यह समूह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की मांग का भी समर्थक है, ताकि उसमें विकासशील देशों का उचित प्रतिनिधित्व हो सके।

ब्रिक्स के सामने चुनौतियाँ:

- हालांकि ब्रिक्स एक मजबूत और प्रभावशाली संगठन है, फिर भी इसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

1. **सदस्य देशों के बीच भूराजनीतिक मतभेद:** ब्रिक्स के सदस्य देशों के बीच कुछ भूराजनीतिक और रणनीतिक मतभेद हैं। उदाहरण के लिए, भारत और चीन के बीच सीमा विवादों के कारण कई बार तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। इसी तरह, रूस और पश्चिमी देशों के बीच तनाव के कारण भी ब्रिक्स की एकजुटता पर असर पड़ता है।
2. **अलग-अलग आर्थिक संरचनाएँ:** ब्रिक्स के सदस्य देशों की आर्थिक संरचनाएँ अलग-अलग हैं। चीन और भारत तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाएँ हैं, जबकि रूस और ब्राज़ील प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित अर्थव्यवस्थाएँ हैं। यह आर्थिक असमानता कभी-कभी संगठन के उद्देश्यों और निर्णय लेने की प्रक्रिया में चुनौती उत्पन्न करती है।
3. **वैश्विक संस्थानों में सुधार की धीमी गति:** ब्रिक्स लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय संस्थानों, जैसे IMF और विश्व बैंक में सुधार की मांग कर रहा है, लेकिन इन संस्थानों में सुधार की प्रक्रिया धीमी है। इसका कारण विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के हितों को प्राथमिकता न देना है।
4. **ब्रिक्स देशों के बीच आपसी व्यापारिक मतभेद:** ब्रिक्स देशों के बीच व्यापारिक प्रतिस्पर्धा और मतभेद भी संगठन के समग्र विकास में बाधा बन सकते हैं। चीन का व्यापारिक प्रभुत्व और अन्य सदस्य देशों के व्यापारिक हितों के बीच असंतुलन भी एक चुनौती है।

ब्रिक्स का वैश्विक प्रभाव और भविष्य:

- ब्रिक्स वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण शक्ति बन चुका है। इसके सदस्य देश वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा बनाते हैं और उनकी संयुक्त जनसंख्या दुनिया की कुल जनसंख्या का लगभग 40% है। इसके अलावा, ब्रिक्स देशों का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) वैश्विक GDP का लगभग 25% है। ब्रिक्स ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार, निवेश और वित्तीय स्थिरता में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- भविष्य में ब्रिक्स के पास बड़ी संभावनाएँ हैं। अगर यह संगठन अपने मतभेदों को सुलझा कर एकजुट होकर कार्य करता है, तो यह वैश्विक शक्ति संतुलन को बदल सकता है। हालांकि, इसके लिए सदस्य देशों को आपसी सहयोग बढ़ाने और वैश्विक मंचों पर अपनी एकजुटता को मजबूत करने की आवश्यकता होगी।

ब्रिक्स (BRICS) का 15वां शिखर सम्मेलन

- ब्रिक्स (BRICS) का 15वां शिखर सम्मेलन अगस्त 2023 में दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में मुख्य रूप से वैश्विक आर्थिक चुनौतियों, बहुपक्षीय सहयोग, और ब्रिक्स देशों के विस्तार पर चर्चा की गई। इस शिखर सम्मेलन की एक खास बात यह थी कि इसमें छह नए देशों को ब्रिक्स में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया, जिनमें सऊदी अरब, यूएई, मिस्र, अर्जेंटीना, इथियोपिया, और ईरान शामिल हैं। इस विस्तार का उद्देश्य ब्रिक्स की वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को और मजबूत करना था।
- सम्मेलन में मुख्य चर्चाएं आर्थिक सुधारों, वैश्विक आर्थिक असंतुलन, और ब्रिक्स देशों के बीच व्यापारिक संबंधों को बेहतर बनाने पर केंद्रित थीं। इसके अलावा, डॉलर के प्रभुत्व को चुनौती देने के लिए सदस्य देशों ने स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने पर जोर दिया। हालाँकि, BRICS द्वारा एक साझा मुद्रा बनाने की संभावनाओं पर भी विचार किया गया, लेकिन यह विचार कई तकनीकी और वित्तीय चुनौतियों के कारण फिलहाल संभव नहीं हो पाया।

- रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन व्यक्तिगत रूप से इस सम्मेलन में शामिल नहीं हो सके और उनकी जगह रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने भाग लिया। वहीं, भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, ब्राजील के राष्ट्रपति लूला, और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भी सम्मेलन में उपस्थित थे, हालांकि शी जिनपिंग ने कुछ सत्रों में व्यक्तिगत रूप से भाग नहीं लिया।
- सम्मेलन का उद्देश्य वैश्विक संस्थानों में सुधार लाने, बहुपक्षीयता को बढ़ावा देने, और दक्षिण-दक्षिण सहयोग को मजबूत करने के लिए एक साझा दृष्टिकोण विकसित करना था। हालांकि, ब्रिक्स सदस्य देशों के बीच राजनीतिक और आर्थिक भिन्नताएं इस संगठन की दिशा और प्रभावशीलता पर प्रश्नचिह्न भी खड़े करती हैं। उदाहरण के लिए, रूस-यूक्रेन युद्ध और चीन-अमेरिका तनाव जैसे मुद्दों पर देशों की अलग-अलग नीतियां इस संगठन की सामूहिक कार्रवाई को प्रभावित कर सकती हैं।
- कुल मिलाकर, 15वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन वैश्विक शासन में सुधार और आर्थिक सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित हुआ, लेकिन इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सदस्य देशों के बीच और भी समन्वय और सहयोग की आवश्यकता है।

ब्रिक्स के साथ भागीदारी में भारत की क्या बाधाएँ हैं?

- **बदलते वैश्विक गठबंधन:** भू-राजनीतिक गतिशीलता के विकास और परिवर्तन के साथ ब्रिक्स के कुछ सदस्य समूह के बाहर के देशों या संगठनों के साथ भी घनिष्ठ संबंध की तलाश कर सकते हैं। यह वैश्विक मंच पर ब्रिक्स की एकजुटता और सामूहिक सौदेबाज़ी की शक्ति को प्रभावित कर सकता है।

- **बहुपक्षीय मंचों पर समन्वय:** जबकि ब्रिक्स **संयुक्त राष्ट्र (UN)** और **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)** सहित वैश्विक शासन संस्थानों में सुधार का लक्ष्य रखता है, सदस्य देश इन सुधारों के प्रति प्रायः अलग-अलग प्राथमिकताएँ तथा दृष्टिकोण रखते हैं।

- **चीन के उदय की चुनौतियों से निपटना:** चीन के प्रभुत्व के कारण भारत को अपनी सुरक्षा और हितों के लिये महत्त्वपूर्ण चुनौतियों तथा खतरों का सामना करना पड़ता है, विशेष रूप से **सीमा विवाद**, **समुद्री सुरक्षा**, **व्यापार असंतुलन**, **प्रौद्योगिकी प्रतिस्पर्धा** और **मानवाधिकारों** के संबंध में।

- **लोकतांत्रिक सिद्धांतों की रक्षा:** भारत को अपनी **स्वायत्तता** या **संप्रभुता** से समझौता किये बिना **पश्चिमी मानक अपेक्षाओं** से संबंधित चुनौतियों से निपटना होगा।
- **ब्रिक्स गतिशीलता को संतुलित करना:** भारत को चीन और रूस के साथ अपने संबंधों को संतुलित करना होगा, जिन्हें पश्चिम द्वारा तेज़ी से **रणनीतिक प्रतिद्वंद्वियों** के रूप में देखा जा रहा है।
- **द्विपक्षीय मतभेदों को प्रबंधित करना:** भारत चीन और पाकिस्तान के साथ अनसुलझे सीमा विवाद तथा रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता की स्थिति रखता है, जो ब्रिक्स के साथ उसके संबंधों को प्रभावित करती है। भारत अफगानिस्तान, ईरान और हिंद-प्रशांत जैसे मुद्दों पर भी रूस से भिन्न विचार रखता है।
- **रूस की विश्वसनीयता का मूल्यांकन:** यूक्रेन युद्ध में रूस की भागीदारी और चीन के साथ उसके गठबंधन ने भी भारत में अपने इस पारंपरिक साझेदार की विश्वसनीयता तथा साख को लेकर चिंताएँ बढ़ा दी हैं।
- **विविध सुरक्षा चिंताएँ:** ब्रिक्स के सदस्य देशों में आतंकवाद और क्षेत्रीय संघर्षों से लेकर साइबर खतरों तक **विविध सुरक्षा चिंताएँ** हैं। इन चिंताओं को दूर करने और संयुक्त सुरक्षा पहलों के समन्वय के लिये सतर्क संवाद की आवश्यकता है।
- **व्यापार असंतुलन का समाधान:** चीन के साथ भारत के लगातार व्यापार घाटे (trade deficit) की स्थिति ने आर्थिक संलग्नता की निष्पक्षता को लेकर चिंताएँ बढ़ा दी हैं। यह व्यापार असंतुलन ब्रिक्स के अंदर भारत के आर्थिक हितों पर दबाव डाल सकता है और इसकी समग्र आर्थिक स्थिरता को प्रभावित कर सकता है।

- **समानता के सिद्धांतों को सुनिश्चित करना:**

  विस्तार **के बाद** चिंता का विषय यह है कि क्या ब्रिक्स का मूलभूत पहलू, जो कि **समानता** है, **बाधित** हो सकता है जिसके परिणामस्वरूप कोई देश, विशेष रूप से चीन जैसे आर्थिक रूप से प्रभावशाली देश अन्य शामिल देशों को प्रभावित कर सकता है।

  - हालाँकि यह संभावना है कि **समानता तथा आम सहमति से निर्णय लेने का सिद्धांत बना रहेगा**, जिससे किसी एक देश के लिये प्रभुत्व स्थापित करना कठिन होगा। **BRICS बैंक** द्वारा ऋण देने की प्रथाओं को सदस्य देशों के बीच समान व्यवहार के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जाता है।

  - इसका **मुख्य दोष** सदस्य देशों की बढ़ती संख्या के साथ **आम सहमति** तक पहुँचने की चुनौती है किंतु विकासशील एवं उभरते देशों के रूप में उनके **साझा हितों** को देखते हुए इस चुनौती का निवारण किया जा सकता है।

- **दीर्घस्थाई चुनौतियों का समाधान:** वैश्विक एकता के व्यापक सिद्धांत के बावजूद BRICS ढाँचे के भीतर बाधाएँ मौजूद हैं। इसका उद्देश्य अल्प प्रतिनिधित्व वाले देशों, विशेषकर ग्लोबल साउथ में, के साथ सफलताओं को साझा करने का है, जिससे संबंधी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।

  - उदाहरणार्थ **BRICS विकास बैंक** सदस्य देशों में आवश्यक महत्त्वाकांक्षी परियोजनाओं के लिये **अपर्याप्त पूंजी** की समस्या का सामना कर रहा है जो कि मुख्यतः 11 अन्य देशों में विस्तार के कारण हुआ है।

  - इसके अतिरिक्त, **आंतरिक विभाजन**, जैसे कि भारत-चीन सीमा विवाद तथा संघर्षों में रूस की भागीदारी, **सहयोगात्मक प्रयासों को प्रभावित करती है।** भारत व चीन में विकास दर की वृद्धि अन्य देशों से बेहतर है जिससे सदस्य देशों के बीच आर्थिक असमानताएँ बढ़ रही हैं जो एक और बाधा उत्पन्न करती हैं।

  - इन बाधाओं का समाधान करने के लिये सर्वसम्मति, एक **साझा दृष्टिकोण** एवं विविध आर्थिक विकास के समक्ष आने वाली समस्याओं का निवारण करने की प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

भारत अपने लाभ के लिये BRICS मंच का उपयोग किस प्रकार कर सकता है?

- **वैश्विक शासन दर्शन को अपनाना:** उभरती वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिये **समन्वित वैश्विक कार्रवाइयों** की आवश्यकता है। अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली की सुरक्षा करना, अंतर्राष्ट्रीय मामलों में सार्वभौमिक भागीदारी सुनिश्चित करना, नियमों का निर्माण तथा साझा विकास परिणाम सुनिश्चित करना भारत के लिये महत्त्वपूर्ण है।
  - **व्यापक परामर्श, संयुक्त योगदान एवं साझा लाभों** हेतु भागीदारी, वैश्विक शासन में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने हेतु उभरते बाज़ारों एवं विकासशील देशों के साथ एकता व सहयोग को बढ़ावा दिये जाने के उद्देश्य के साथ भारत को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि BRICS द्वारा एक **वैश्विक शासन दर्शन** का अंगीकरण किया जाए।
- **सार्वभौमिक सुरक्षा का सर्थन करना: भारत को सार्वभौमिक सुरक्षा** में सक्रिय रूप से योगदान देने वाले BRICS देशों **का समर्थन** करना चाहिये। दूसरों की सुरक्षा का हनन कर अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता देने से तनाव एवं जोखिम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। प्रत्येक देश की सुरक्षा सुनिश्चित करना व सम्मान करना तथा संघर्ष की स्थिति में वार्ता को प्रोत्साहन देना एवं एक संतुलित, प्रभावी क्षेत्रीय सुरक्षा तंत्र को बढ़ावा देना अत्यावश्यक है।
- **समूह के भीतर सहयोग को बढ़ावा देना:** भारत को BRICS में **चीन के प्रभुत्व को कम करने**, संतुलित आंतरिक गतिशीलता को बढ़ावा देने तथा **विविधीकरण की तत्काल आवश्यकता** पर बल देने की दिशा में कार्य करना चाहिये। प्रत्येक सदस्य को भविष्य में निरंतर प्रासंगिकता के लिये अवसरों व सीमाओं का आकलन करना चाहिये।

- **आर्थिक योगदान सुनिश्चित करना:** BRICS देशों को **साझा विकास में सक्रिय रूप से योगदान** देना चाहिये। बढ़ते डी-वैश्वीकरण तथा एकपाक्षिक प्रतिबंधों के समाधान हेतु आपूर्ति श्रृंखला, ऊर्जा, खाद्यान तथा वित्तीय लचीलेपन में पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग बढ़ाना आवश्यक है। **OECD** के समान एक संस्थागत अनुसंधान विंग की स्थापना विकासशील विश्व के अनुरूप समाधान प्रदान कर सकती है।

- **सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशासन को बढ़ाना:** अपनी क्षमता का उपयोग कर BRICS देशों को **सामूहिक** रूप से विकासशील देशों के पक्ष में **वैश्विक स्वास्थ्य प्रशासन** को आगे बढ़ाना चाहिये। **भारत का 'वन अर्थ, वन हेल्थ' दृष्टिकोण** सार्वजनिक स्वास्थ्य में बहुपक्षीय सहयोग का समर्थन करता है। **BRICS वैक्सीन अनुसंधान और विकास केंद्र** का उपयोग करना, संक्रामक रोगों के लिये प्रारंभिक चेतावनी तंत्र बनाना एवं वैश्विक स्वास्थ्य प्रशासन सहयोग के लिये उच्च गुणवत्ता वाले सार्वजनिक उत्पाद प्रदान करना आवश्यक है।

16TH BRICS Summit:

- 22-23 अक्टूबर 2024 को रूस की यात्रा पर रहेंगे PM मोदी, 16वें ब्रिक्स समिट में होंगे शामिल
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (Narendra Modi), रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के निमंत्रण पर 22-23 अक्टूबर को कजान (Kazan) में आयोजित होने वाले 16वें BRICS सिमट में भाग लेने के लिए रूस का दौरा करेंगे. विदेश मंत्रालय ने एक ऑफिशियल नोटिस में कहा, "*Strengthening Multilateralism for Just Global Development and Security*" *"न्यायसंगत वैश्विक विकास और सुरक्षा के लिए बहुपक्षवाद को सुदृढ़ बनाना"* थीम पर आयोजित होने वाला यह शिखर सम्मेलन नेताओं को अहम ग्लोबल मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक अच्छा मंच प्रदान करेगा. विदेश मंत्रालय. ने कहा, "शिखर सम्मेलन ब्रिक्स द्वारा शुरू की गई पहलों की प्रगति का आकलन करने और भविष्य में सहयोग के लिए संभावित सेक्टर्स की पहचान करने का एक मूल्यवान मौका प्रदान करेगा."

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी रूस की अध्यक्षता में कज़ान में आयोजित होने वाले 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए रूसी संघ के राष्ट्रपति महामहिम श्री व्लादिमीर पुतिन के निमंत्रण पर 22-23 अक्टूबर 2024 तक रूस की यात्रा करेंगे।
- 2. शिखर सम्मेलन, जिसका विषय "न्यायसंगत वैश्विक विकास और सुरक्षा के लिए बहुपक्षवाद को सुदृढ़ बनाना" है, नेताओं को प्रमुख वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करेगा।
- 3. शिखर सम्मेलन ब्रिक्स द्वारा शुरू की गई पहलों की प्रगति का आकलन करने और भविष्य में सहयोग के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करने का एक मूल्यवान अवसर प्रदान करेगा।
- 4. अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा ब्रिक्स सदस्य देशों के अपने समकक्षों और रूस के कज़ान में आमंत्रित नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें करने की भी उम्मीद है।

निष्कर्ष:

- द्विपक्षीय मुद्दों पर **आम सहमति** बनाना महत्त्वपूर्ण है, इसके लिये अलग से वार्ता करने की आवश्यकता है। मतभेदों को स्वीकार करते हुए यह समझना आवश्यक है कि **बहुपक्षीय मंच** विभिन्न नियमों के तहत कार्य करते हैं। प्रधानमंत्री की BRICS शिखर सम्मेलन की टिप्पणियों से प्रेरित होकर, BRICS में हो रहे विस्तार से अन्य बहुपक्षीय संस्थानों में सुधार लाना चाहिये। **विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** तथा सबसे अधिक आबादी वाले देश के रूप में भारत **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद**, **WTO**, **WHO** एवं अन्य में सुधार की आवश्यकता पर बल देता है। भारत के अनुसार BRICS विस्तार 21वीं सदी के आवश्यक बदलावों के लिये एक मॉडल प्रदान करेगा किंतु सुधार में विफलता इन संस्थानों को अप्रभावी बना सकती है।

- ब्रिक्स एक ऐसा संगठन है, जो वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में विकासशील देशों की आवाज़ को मज़बूती देने के लिए काम कर रहा है। इसने अपने गठन के बाद से कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं, लेकिन इसे अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अगर सदस्य देश आपसी मतभेदों को सुलझा कर एकजुट रहते हैं, तो यह संगठन वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

- ब्रिक्स का भविष्य विकासशील देशों के लिए आशाजनक है। वैश्विक व्यवस्था में इसका बढ़ता हुआ प्रभाव यह संकेत देता है कि ब्रिक्स आने वाले दशकों में एक महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति बन सकता है।

THANKS

Dr. SHILPI JAISWAL